

121/4

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet)



कौटिल्य एकेडमी  
संस्थापक एवं प्रमुख प्रा. -

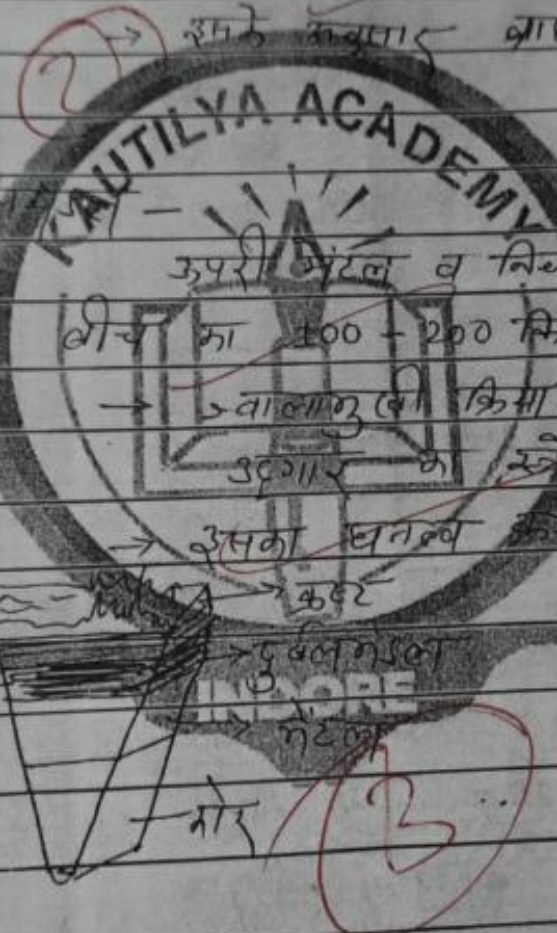
1 A

केलु ब्लॉक की नवतारा परिकल्पना -

→ तारों में लाभिकीय सेलयन की उत्पत्ति के संदर्भ में है।

→ यह ब्रह्माण्ड के अस्तित्व के विंग-बैंग सिद्धांत का संकेत करती है।

→ इसके अन्तर्गत ब्रह्माण्ड विप्लव है।



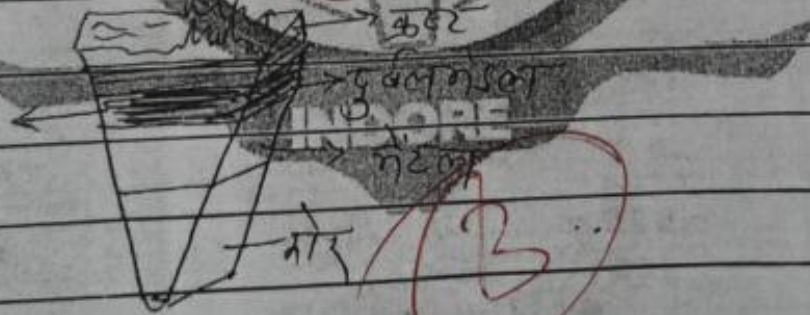
2 B

दुर्बल भूकंप

ऊपरी भूटल व निचले क्रस्ट के बीच का 100 - 200 किमी. की परत

→ ज्वालामुखी क्रिया के दौरान उदगार का स्त्रोत

→ इसका घनत्व क्रस्ट से अधिक होता है।



C

कार्यांतरित चट्टानें -

हाप, ढाब व शलायनिक

क्रियाओं के परिवर्तनकारी प्रभाव के चलते

आग्नेय व क्वलसीदी चट्टानों से कार्यांतरित

चट्टानें बनती हैं।

7

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
 (Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

जैले - श्रेणारट (आग्नेय) - नीस (कापोटलि)  
 पूता पत्थर (जवसादि) - खेगमदमर (कापोटलि)  
 गैले (आग्नेय) - सरपेंडइन

बैथोलिथ - ① आंतरिक आग्नेय पदार्थ का प्रकार

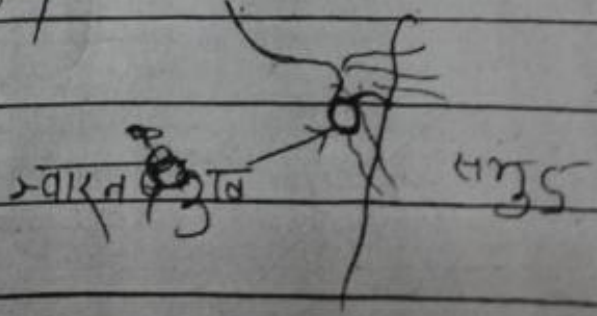
यू. एस. ए. के आकार की इतनी बैथोलिथ  
 यूपी के नाडा की इस्टर रेंज, बैथोलिथ  
 के कारण है।

e

उत्तर प्रदेश में उत्तर प्रदेश मुल डेल्टा →  
 पूर्व की ओर बहने वाली

नदियाँ उत्तर प्रदेश में उत्तर प्रदेश मुल डेल्टा का निर्माण करती हैं।

→ नदी का उत्तरीय मुल जहाँ राजा तथा  
 लक्ष्मीय जन मिल जाते हैं, उत्तर प्रदेश मुल  
 डेल्टा कहलाता है।



2



1 F

→ हिमालय द्वारा विभिन्न स्थानों पर नुतारक  
बढ़ती है।

→ हिम डीप के नाम से भी प्रसिद्ध

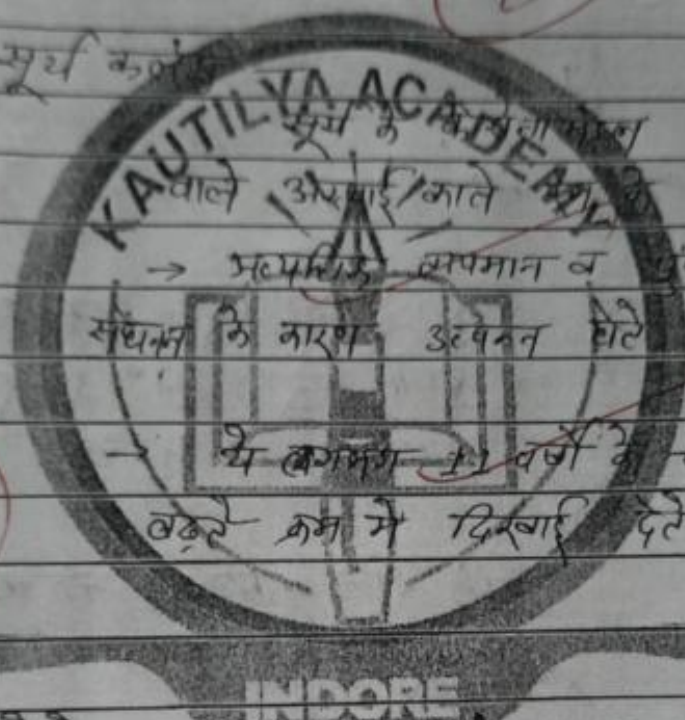
→ हिमच्छादित जगहों जैसे मेघनादिका, गीनल 05  
में पाये जाते हैं।

1 G

सूर्य कल

→ सूर्य के किरणों में दिखाई देने  
वाले अणुओं को धरती  
→ अणुओं के समान व प्रकीर्ण प्रकाश  
संघर्ष के कारण अवनत होते हैं।

→ ये लगभग 11 वर्षों के चक्र में घटते व  
बढ़ते क्रम में दिखाई देते हैं।



1 H

शुद्धमेडा - आकाशगंगा का नाम है।

- दिल्ली के आकाशगंगा की सबसे  
नजदीकी आकाशगंगा है।

- यह पृथ्वी से 2.5 मिलियन प्रकाश  
वर्ष दूर स्थित है।

1 I

सिजिगी - पृथ्वी पर समुद्रीजल के ऊपर उठने  
के चरम उभाव को सिजिगी कहते हैं।

एक ही स्थान पर  
पानी, चंद्रमा

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)



भारत का नं. 1 संस्थान  
कौटिल्य एकेडमी  
सफलता का प्रवेश द्वार

प्रश्न संख्या

→ यह सूर्य की किरणों के प्रतिबिम्बित गुह्यत्वामरुण  
उभाव से उत्पन्न दिखते हैं।

→ दीर्घवार (खनिगी) 2 तरह से -



(I)

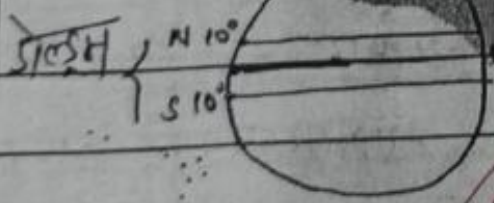
(II)

विषुव परा

सुति क्या

डोलुम - ① पृथ्वी पर भूमध्यरेखा के  
दोनों ओर 10° उत्तर तथा 10° दक्षिण  
क्षेत्र डोलुम कहलाते हैं।

② शाल कटिबंध भी कहते हैं।



① कारण - पृथ्वी का  $23\frac{1}{2}^\circ$

झुकाव तथा  
सूर्य की परिक्रमा

शाब्दर का मैदान -

① पर्वतपदीय क्षेत्रों में  
बड़े गोलाशमों तथा बजरी जैसे अवसादों से  
बिभित मैदान हैं।

② नदियाँ विलुप्त होकर आगे



प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पत्रिका  
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान  
कौटिल्य एकेडमी  
राजस्थान का प्रवेश द्वार...

हराई में निवृत्त होती है।

3) ये अनुपजादु होते हैं।

2

भारत में मूल उद्योग केंद्र -

1) पंजाब में - शिमला, सीरागढ़, बाली

2) उत्तर प्रदेश - बिरासापरनम, गुंडूर

3) उत्तर प्रदेश - काशी, सहजनवाँ

4) बिहार - पूर्णिया, दरिहार

→ भारत का मूल उत्पादन में प्रथम स्थान है।

2

स्वर्णरेखा नदी - गुजरात → देरा नागपुर पठार, झारखण्ड

संगम क्षेत्र - झारखण्ड, पश्चिम बंगाल क्षेत्र हुए  
उत्पत्ति हर पर बंगाल की खाड़ी  
में मिली है।

→ नदी के बजरी में सोना धातु मिलने  
के कारण स्वर्णरेखा नाम पड़ा।

3



9 N

आम्र वर्षा - भारत से उत्पन्न के बीच तीव्र माई हवाओं से साथ वर्षा भारत के साथ होती है।  
 → कई नाम है - काले बेशाही, पेरी लौसम, नॉर्वेस्टर

दक्षिण पूर्व एशिया में यह वर्षा के क्षेत्रों के लिए आम्र वर्षा कहते हैं।

2 0

भारत में खनि क्षेत्र

- ① कोलार व हरिद्वार खनि - कर्नाटक
- ② रामगिरि खनि, उत्कलपुर - झारखण्ड प्रदेश
- ③ बरंगल (तेलगाणा)
- ④ नीलगिरि एवं सलैम - तमिलनाडु

3

→ देश की कुल खनि उत्पादन का 98% केरल राज्य से होता है।

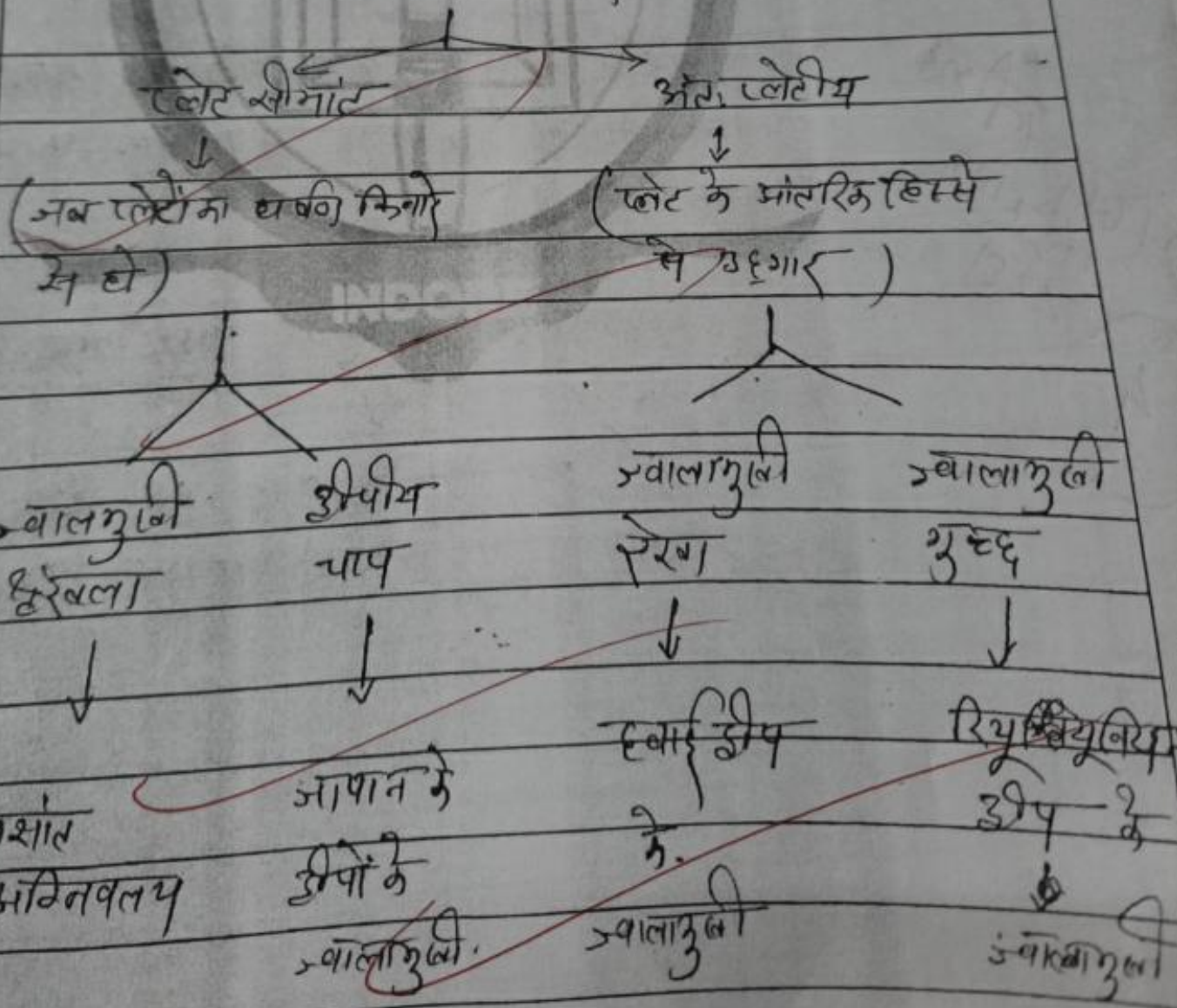


3 A

पृथ्वी की मानसिक आकृतियों के फलस्वरूप विभिन्न मैग्ना जम बिनी दरार या नदी के माध्यम से बाहर आता है जो इसे ज्वालामुखी करते हैं।

ज्वालामुखी का निर्माण प्लेट विवर्तनीय आकृतियों के कारण होता है। प्लेट सीमांत व अंतःप्लेटीय रिफ़ॉल्ड के कारण विश्व भर में ज्वालामुखी वितरण कालम-कालम उमर से हुआ है।

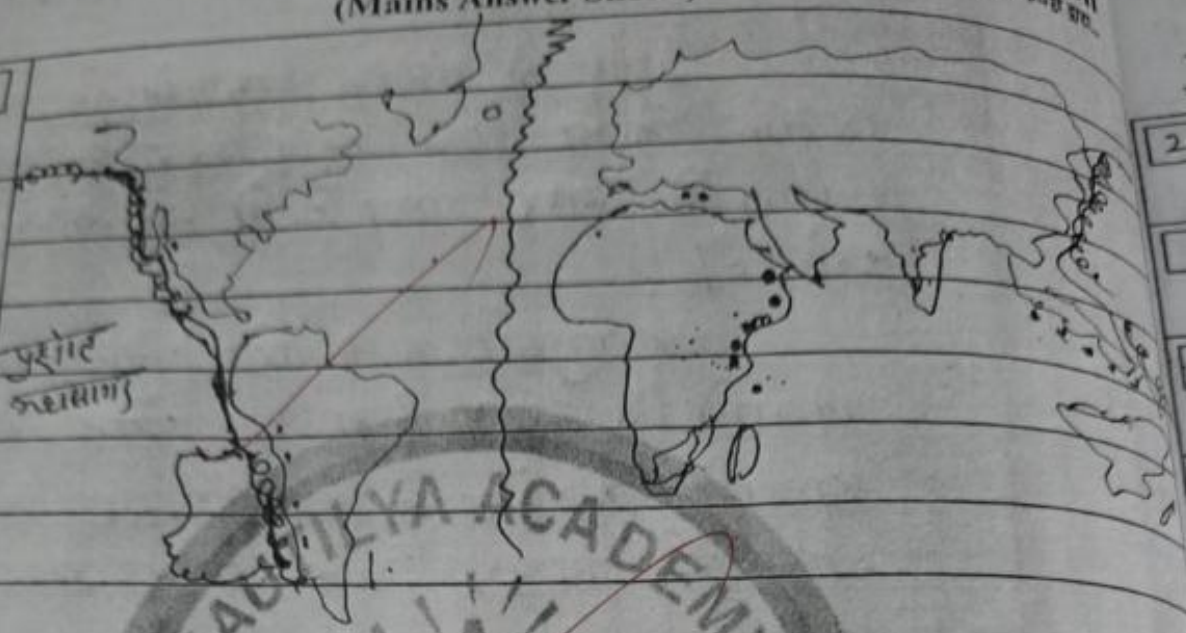
विश्व वितरण के आधार पर ज्वालामुखी



4

प्रश्न संख्या

प्रश्न संख्या



कि रिंग ऑफ फायर

उत्तर अक्षांश के किनारों को सक्रिय  
अबालागुली होने के कारण रिंग ऑफ फायर की  
शुरुआत होती है।

अधिकतर अबालागुली महाद्वीपीय-महासागरीय  
किनारों पर अवस्थित है।

इंडोनेशिया तथा रिपुब्लिकन, हवाई द्वीप का विपणन  
अबालागुली क्रिया के परिणामस्वरूप हुआ है।



2 B

पवन एक शूआकृतिक कारक है जो अपरदन एवं निक्षेपण क्रिया के परिणामस्वरूप विभिन्न स्थलरूपों का निर्माण करती है।

इसका महत्वपूर्ण में पवनों का प्रभाव सर्वाधिक होता है। पवन अपवाहन तथा घर्षण आदि के द्वारा अपरदन करती है और परिवहन प्रक्रिया के द्वारा अपवाहन, निक्षेपण आकृतियाँ बनाती है।



पवनों द्वारा निर्मित स्थलरूपों

अपरदनकारक

निक्षेपक

→ पेडीमेंट

→ पेडीप्लेन्स

→ क्लया

→ अपवाहन गरी

→ गुहा

→ इन्क

→ टेबल

→ धौठिका शैल

→ बालू रिव्वे

→ ~~बालू रिव्वे~~

→ बालू रिव्वे की

विभिन्न प्रकृतियाँ

→ बरखान

→ अनुदैर्घ्य रिव्वे



पेडीमेंट → पर्वतों के पाद पर मेढ़ डाल  
वाले चट्टानी हल

फेरीलेन्स → पेडीमेंट निर्माण के चलते कलत  
निर्मित उच्च धरातल, आकृति विहीन  
मैदान

हलाया <sup>महदयल्लो</sup> में उथली जल  
सोखने / जिनके <sup>जुवे</sup> पानी गलते हैं।  
अपवाहन गति → पर्वतों के एक ही किनारे में हवायी प्रवाह  
के निर्मित उथले गर्त।

अपवाहन गति → पर्वतों के एक ही किनारे में हवायी प्रवाह  
के निर्मित उथले गर्त।

क्षेत्र → महदयल्लो की वे चट्टानें जिनके तल  
तोड़ से पहले लया ऊपरी हिस्सा टोपी  
के आकार का होता है।

वालू रिल्वे → वररवादा

→ परवलविकु रिल्वे

अनुसर्ष रिल्वे

अनुसर्ष  
रिल्वे  
→



2 C

महासागरीय जल के कोरिनथ दर्यानांतरण प्रवाह को जलधारा कहते हैं।

पृथ्वी का घूर्णन, कोरियोलिस बल तथा प्रचलित पवन के कारण अर्थात् जलधाराएँ- दक्षिण-पश्चिम गतिशील तथा स्पष्ट दिशा वाली होती हैं।

① ~~दिशा निर्धारण में सहायक~~ - यह जलधारा की दिशा को निर्धारित कर समय तथा ऊँचाई को बतला करती हैं।

② ~~जलवायु में संशोधन~~ - जलधाराओं की प्रकृति (गर्म/ठंडी) के आधार पर क्षेत्रीय तापमान को प्रभावित करती हैं।

जैसे - उत्तरी अटलांटिक ड्रिफ्ट के कारण उत्तरी यूरोप तथा पश्चिमी तट पर नार्वे जैसे ध्रुवीय देशों के जनजीवन में अनुकूलता मिलती है।

इसी प्रकार उष्ण कटिबंधीय तटों के समीप ठंडी जलधारा से ताप में कमी आती है।

① आर्थिक प्रभाव -

ठंडी हवा गर्म जल द्वारा  
के मिलने से वह क्षेत्र मध्य उष्णकटिबंध की  
दृष्टि से अपव्युत्पन्न हो जाता है।

अर्थात् कि ठंडी जलवायु से लैंडलॉक  
(मध्याह्निकी का स्वभाव) लेकर काली है वही

गर्म जलवायु से सखली अजल को अनुकूल  
करती है।

जैसे - कनाडा के पूर्वी तट पर क्वेबेक (ठंडी)  
का थर्मल स्ट्रीम (गर्म) के मिलने से अपव्युत्पन्न  
मध्य क्षेत्र का निर्माण होता है।

अतः जलवायु से मानवता को  
सकारात्मक रूप से कई माध्यमों में  
प्रभावित करती है।





मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

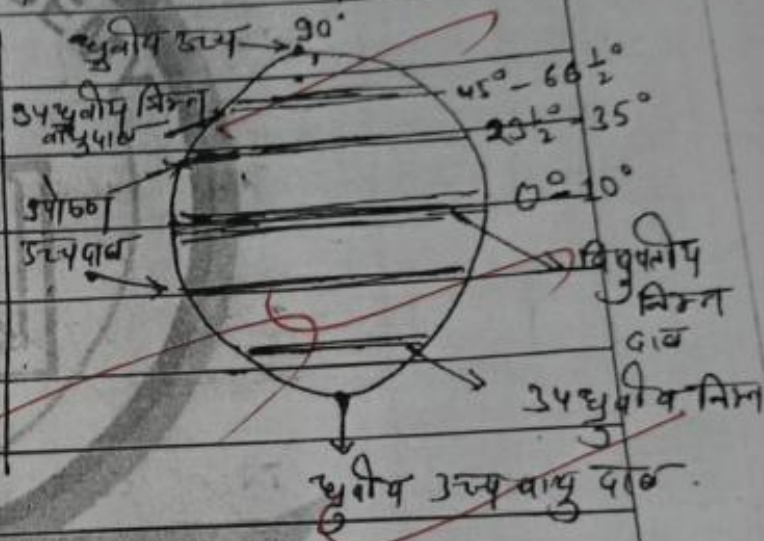
प्रश्न संख्या

2 D

वे पवने जो ग्लोब पर उच्च तथा निम्न वायुदाब क्षेत्रों के मध्य स्थायी रूप से चलते रहती हैं, उपचलित पवने कहलाती हैं।  
उपचलित पवने स्थायी और निश्चित दिशा वाली होती हैं।

पृथ्वी पर विभिन्न दाब करिबंदों के अनुसार उपचलित पवने तीन प्रकार की होती हैं।

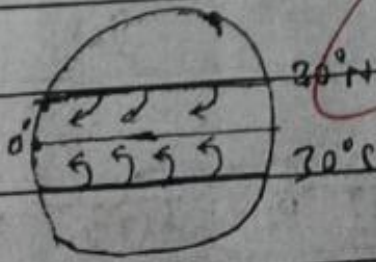
- ① व्यापारिक पवने
- ② पड़ुमा पवने
- ③ ध्रुवीय पवने



व्यापारिक पवने -

ये 30° अक्षांशों से मध्यरेखा की ओर चलती हैं। ग्लोब में चलती हैं।

दिशा → उत्तरी गोलार्ध में वे 35° से दांयी मुड़ जाती हैं।

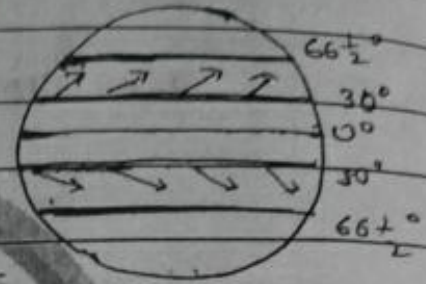


दक्षिणी गोलार्ध में 35° से बाँयी मुड़ जाती हैं।

मध्यरेखा में ये टकराकर धनधोर बरसि जाती हैं।

पड़सा पवने -

ये उपोष्ण इत्य दक्षिण करिबं च है  
उपध्रुवीय निम्न दाब करिबं च की ओर चलने  
वाली पवने है।

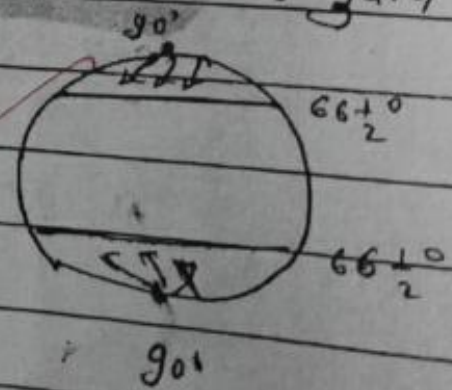


→ उत्तरी गोलार्ध की उपोष्ण  
दक्षिणी गोलार्ध में इनकी गति  
लेज होती है।

→ दक्षिणी गोलार्ध में इसे गरमला चलीया, उचेंडपचासा  
तथा चिरबला साया के नाम से जाने जाती है।

ध्रुवीय पवने -

ध्रुवीय इत्य वायुदाब है उपध्रुवीय  
निम्न दाब की ओर उवाहित पवने ध्रुवीय  
पवने कहलाती है।



→ तापमान कम होने के  
कारण इनके बर्षा की  
संभावना कम होती है।

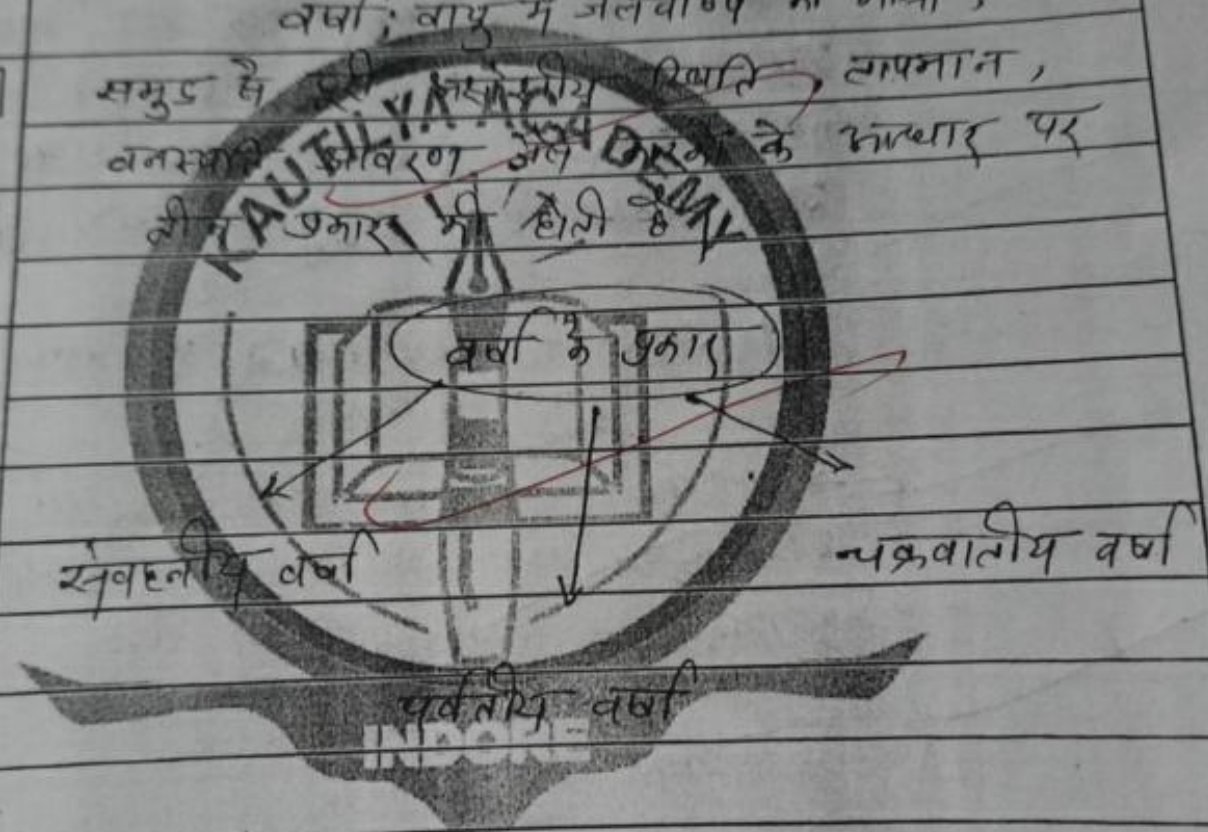
ये सभी पवने पृथ्वी के इनके स्थानों पर  
मौसम विधिक के लोह पर महत्वपूर्ण क्रमिका  
बिजाली है।



2 E

बादल निर्गमि प्रक्रिया के बाद जब जल कणों की मात्रा अधिक होती है तब यह जल बूंदों के रूप में धरातल पर गिरता है, इसे वर्षा/वर्षण कहते हैं।

वर्षा; वायु में जलवाष्प की मात्रा, समुद्र से, पर्वतीय शिखरों, लगभग, वनस्पतियों के आवरण और शहरों के आसपास पर भी प्रकारों में होती है।

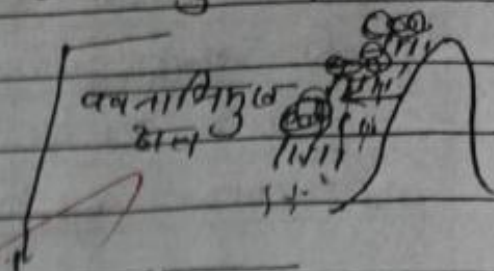


संवहनीय वर्षा -

जब गर्म वायु हल्की होकर ऊपर उठती है तो आशेषण के दौरान <sup>पके</sup> जलवाष्पमान में कमी लब्ध आइस में घटि होती है। जब जलवाष्प का संघनन होकर कपासी मेघ बनते हैं तो चमक-व गरज के साथ धनधोर वारिश संवहनीय वर्षा कहलाती है।

वर्षा क्षेत्र - डोलुम तथा विषुवरेखीय क्षेत्र।

② षट्तीय वर्षा -



षट्तीय वर्षा के सारे जगह वर्षा का कारण है आरोग्य के लिए ठीक होते हुए जलवाष्प संघनित होकर शीत वायु वर्षा करती है। इसे षट्तीय वर्षा मान्यता वर्षा कहते हैं।

इस प्रकार के परिपक्व षट्तीय वर्षा - पूर्ण (महालेश्वर)।

- षट्तीय वर्षा में पर्वत के दूसरी तरफ का क्षेत्र शुष्क तथा वर्षाविहीन ही रहता है।
- विश्व में सर्वाधिक वर्षा रानी तरह की है।

③ पक्रवातीय वर्षा -

गर्म तथा ठंडी वायु के मिलने के ठंडी वायु गर्म वायु के ऊपर की ओर धकेली है निम्न ऊपर उठती वायु ठंडी होकर वर्षा करती है। इसे पक्रवातीय वर्षा कहते हैं।

- यह वर्षा धीरे तथा लंबे समय तक होती

वर्षा क्षेत्र - मध्य अक्षांश

4-5



2 F

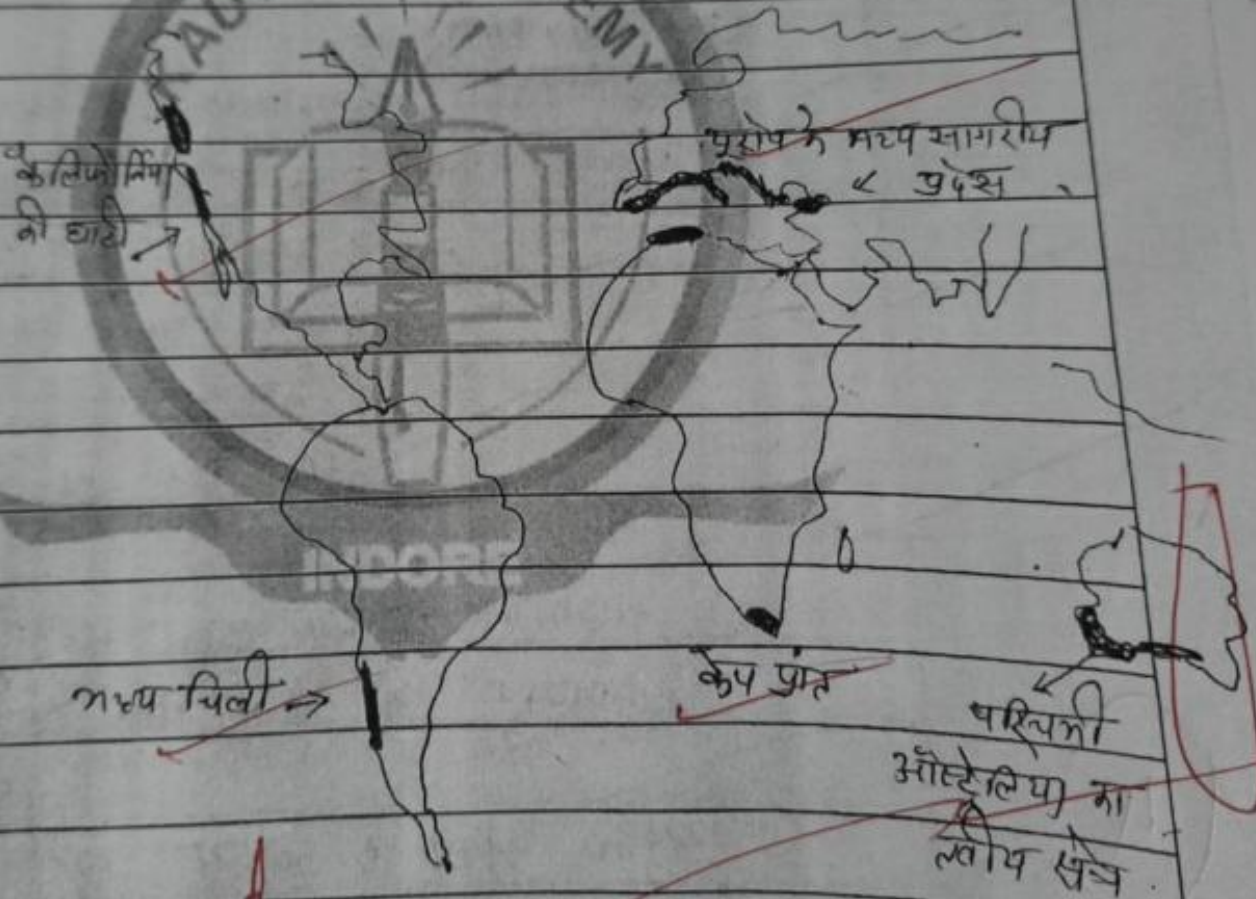
शुष्कसागरीय जलवायु -

शुष्कसागर के

भासपास की बिन्दुत जलवायु शुष्कसागरीय जलवायु कहलाती है।

इसका विस्तार - भूमध्यरेखा के दोनों

ओर 30° से 45° अक्षांशों के मध्य महाद्वीपों के परिधीय भाग में पायी जाती है।



~~जलवायु~~

उष्ण विषमतायु -

① शीतकालीन वर्षा, जो

चक्रवालों के द्वारा होती है।

3) शीत ऋतु में मौसम गर्म और शुष्क होता है जबकि शीतकाल में साधारण होता है।

3) इस बलवायु के अंतर्गत कानून वाले क्षेत्र रसायन पत्तों के रबड़ी के कबुआ हैं।

4) द्वितीय विश्वयुद्ध -

- यूनाइटेड किंगडम का उत्तरी किनारा
- यूएसए में कलिफोर्निया बंदी
- द. अमेरिका का मध्य पिली
- दक्षिण अमेरिका आफ्रीका का केप टाउन
- ऑस्ट्रेलिया का दक्षिण-पश्चिम तट.

5) वायुदाब हमेशा उच्च रहता है। जिसके ग्रीष्म ऋतु के वर्षा नहीं होती।

6) पड़ुआ चक्रों के कारण होने वाली शीतकालीन वर्षा, पश्चिम से पूर्व की ओर जाने पर क्रमशः घटती है।



2 64

भारतीय मैदान भारत के विभिन्न प्राकृतिक क्षेत्रों के इन क्षेत्रों का 43% हैं। परिसर में सतलुज से लेकर पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी तक का क्षेत्र उत्तर भारत का मैदान कहा जाता है।

इसके अंतर्गत पंजाब-हरियाणा मैदान, राजस्थान मैदान, गंगा मैदान, इमम घाटी आदि शामिल हैं। एक क्षेत्र कृषि में इन्टेंसिव है।

भारतीय मैदानों की अलग-अलग समस्याओं को हम उत्तर भारत के मैदान तथा उत्तरी मैदानों के परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। इसी के मुख्य इतका अंतर्गत महत्व है।

महत्व →

① भारतीय मैदान अपनी जल की उपलब्धता के लिए प्रसिद्ध हैं जो कृषि उपज देकर जीवन का धरण पोषण करती हैं।

② मैदानों में बहने वाली नदियाँ भूमिगत जल स्तर को निरंतर बनाये रखती हैं।

③ मैदान अवसंरचना, परिवहन विकास के आधार बनाते हैं।

④ ये मैदान महत्वपूर्ण खनिज संचयनों के

भंडार हैं। परिजमी हर से मेनोजाइट प्राप्त होगी है।  
④ पूर्वी तटीय मैदान कोना प्रायद्वीप के लिए उपयुक्त है।

⑤ फसलों की विविधता इसी मैदानों की है।  
जैसे - उत्तर भारत का मैदान देश की 40% जनसंख्या का पोषण करते हैं।

- कोरबा मैदान त्रारिपल, आम, साब, सागवान के उत्पादन हेतु उपयुक्त है।

- केरल तथा मालाबार तटीय मैदान गरम मसाला, केला सुपारी उत्पादन के लिए उपयुक्त है।

समुद्रों तथा

⑥ नदियों द्वारा निर्मित; जिले इसी मैदानों के सांदर्य को बढ़ाती हैं। जैसे - जिल्हा इरीव,

⑦ विभिन्न संस्कृतियाँ प्राचीन काल से लेकर अब तक उन मैदानों में बनी-बिखरी। ये मैदान इसी के अतिरिक्त की उपयुक्त लड़ाइयों के साक्ष्य हैं।

भारतीय मैदान अपनी विशेष परिस्थिति के कारण अलग-अलग विशेषताओं से भरे हैं।

4

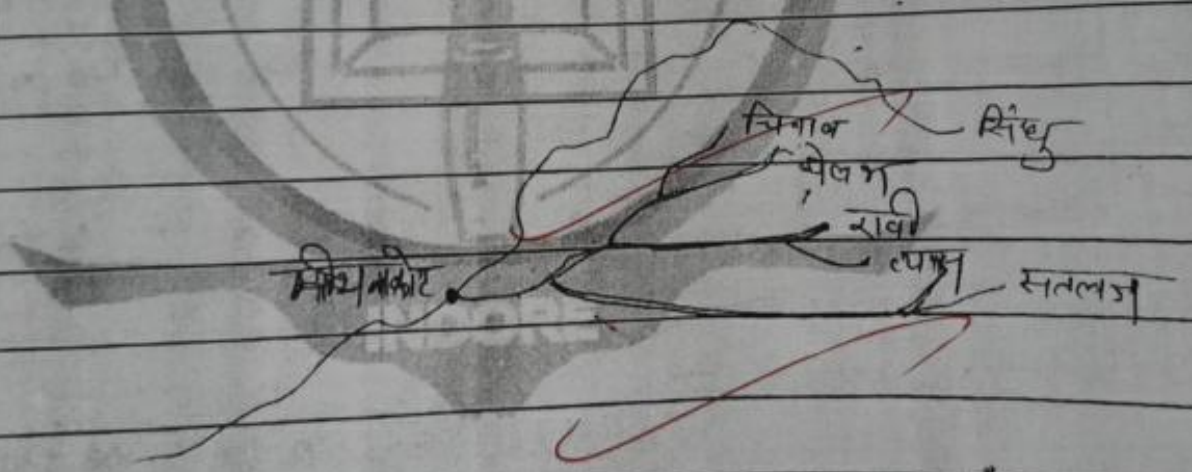


2 M

सिंधु नदी का उद्गम हिमालयी सपवाह तंत्र का ही एक भाग है। सिंधु नदी का उद्गम तिब्बत में बेसरू के निकट जेमयोंगडुंग नामक उलेखित से हुआ है। सिंधु की कुल लंबाई 2880 मी है जिसमें 1114 मी भारत में है।

सिंधु नदी की विभिन्न सहायक नदियों में से दो ही सहायक नदियाँ श्याम, गिलगित, काबुल, कुश्न, शिगार, जस्कर, हुंन, बुधा, झोस आदि हैं।

इनमें से कुछ हिमालय से तथा अन्य झुलेमान गाँव से आकर सिंधु में मिलती हैं।



सिंधु की बाँधी सहायक नदियाँ चिनाब, सेलम, रावी, घाघर, सतलज या पंचनद सिंधु में मीथनकोट, पाकिस्तान में मिल जाती हैं।

सिंधु नदी, अपनी सभी सहायक नदियों का जल लेकर अंततः कराची पूर्व में अरब सागर में गिरती है।

सिंधु नदी भारत की महत्वपूर्ण नदी है जिसे लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच 1960 में सिंधु जल समझौता हुआ जिसके तहत भारत को उसकी तीन सहायक नदियों का जलाधिकार मिला

सिंधु नदी की महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ -

① जैलम - हिमालय की पीरपंजाल गिरिपद पर स्थित केरीनाग झरने से → लोनागर में महारबड़ बगिचा बरती है

② चिनाब - सिंधु की सबसे बड़ी सहायक नदी - चंडा व भागा नामक सरिताओं के मिलने से बनती है।

③ रावी - जद्वाल - हिमाचल प्रदेश में स्थित रोहतांग दर्रे के पश्चिम से

④ व्यास - रोहतांग दर्रे के निकट व्यास कुंड से उदगम

- कुल्लू घाटी के सौदर्य को योग्य करती है

⑤ सतलुज - मानसरोवर के निकट राक्षसताल से उदगम

- भारद्वाजनागल परियोजना इसी नदी पर स्थित



जलमार्ग, प्राचीन काल से ही आषानादी के लिये उपयुक्त होते रहे हैं। वर्तमान में भारत में राष्ट्रीय जलमार्गों की संख्या 111 है जिन्हें राष्ट्रीय जलमार्ग अधिनियम, 2016 के तहत घोषित किया गया।

भारत के महत्वपूर्ण राष्ट्रीय जलमार्ग —

① राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-1 :-

- यह भागीरथी-गुगली-गंगा नदी क्षेत्र पर स्थित है।
- इलाहाबाद से हल्दिया के जोड़ता है।
- लंबाई - 1620 किमी.

② राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-2 :-

- ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित है।
- धुबरी से सदिया के बीच।
- लंबाई - 891 किमी.

③ राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-3 :-

- कोशी नदी पर
- कोटवापुरम से मोल्लम के बीच।
- लंबाई - 205 किमी.
- 3धोग मेडल और चंपकारा नहर व कोशी परियोजना समुद्रतल नहर के बीच स्थित।



④ राष्ट्रीय जलमार्ग - 4 - :

- गोदावरी तथा कृष्णा

नदी से बनी काकीनदा - पुदुचेरी नहर को  
जलमार्ग - 4 का दर्जा प्राप्त है।

- 2008 में घोषित

- लंबाई - 1078 किमी.

⑤ राष्ट्रीय जलमार्ग - 5

उड़ीसा व पश्चिम बंगाल

में स्थित है।

⑥ राष्ट्रीय जलमार्ग क्र. 6 -

असम में अवस्थित है।

5  
भारत ने सभी राष्ट्रीय जलमार्गों के विकास  
के लिए एक राष्ट्रीय जलमार्ग विकास परियोजना  
भी शुरू की है जो विश्व बैंक द्वारा समर्थित है।

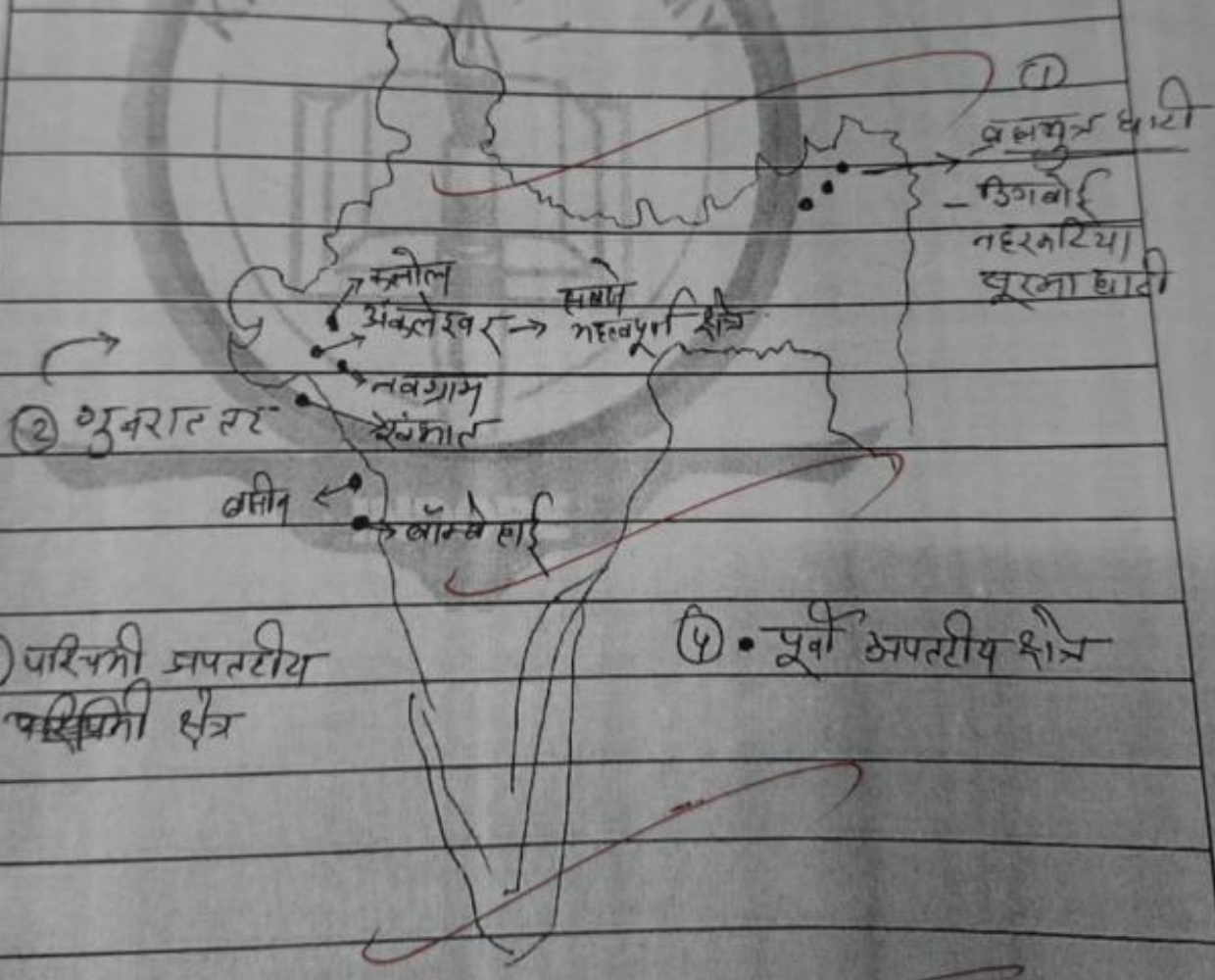


2 K

रुबिन तेल है; पेट्रोलियम शोधन से प्राप्त किया जाने वाला पदार्थ है।

भारत में जहाँ भी टर्शियरी युग की अवसादी चट्टानें पायी जाती हैं वही से रुबिन तेल की उत्पत्ति की जा सकती है।

वर्तमान में भारत में रुबिन तेल के उत्पादन हेतु 4 क्षेत्र उल्लिखित हैं।



② गुजरात एवं पश्चिमी तटीय क्षेत्र

④ पूर्वी तटीय क्षेत्र

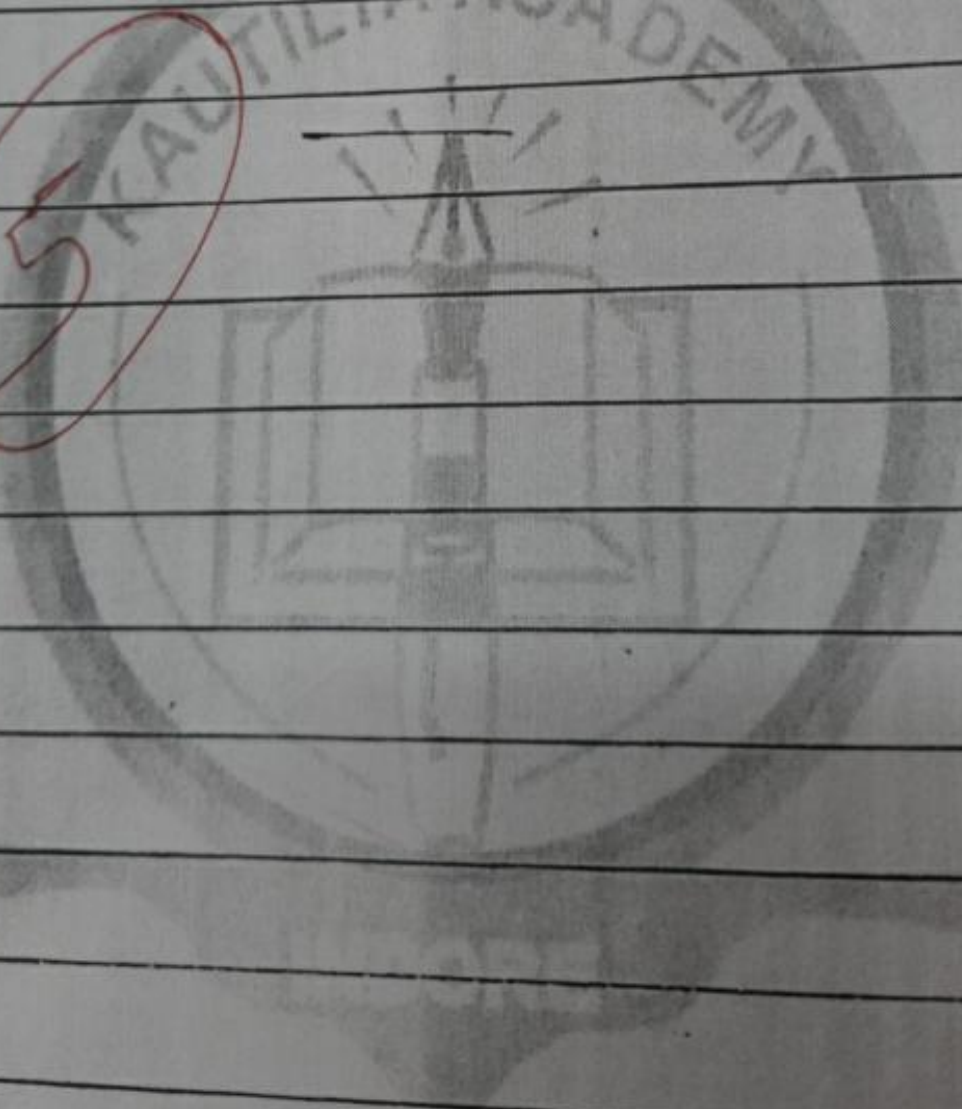
भारत के सभी 4 क्षेत्रों में सबसे पुराना रुबिन उत्पादक क्षेत्र असम में स्थित डिगबोई है। यहाँ भारत की पहली तेल शोधनशाला

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका  
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या   की स्थापना 1893 में स्थापित की गई थी।

भारत में सर्वाधिक तेल उत्पादन आपत्तीय क्षेत्र, राजस्थान व गुजरात से किया जाता है।

हाल ही में राजस्थान में नये तेल क्षेत्रों की खोज की गई है जिनमें मंगला, भाग्यम, एश्वर्य नामक तेल क्षेत्र शामिल है।



5



वायुमंडल में उपरिष्ठ वायु द्वारा पृथ्वी की सतह पर डाला गया दबाव वायुमंडलीय दबाव कहलाता है।

यह उत्प्रेक स्थान पर भूनाग-सलम होता है, जहाँ कि वायुदाब घर तापमान, ऊँचाई, पृथ्वी की धूर्णन गति, जलवाष्प आदि का प्रभाव पड़ता है।

सामान्यतः वायुदाब पृथ्वी के मक्षारों में निम्न से उच्च की ओर बढ़ता है परंतु धूर्णन गति के कारण इसमें परिवर्तन होता है। अतः पृथ्वी पर ~~इस~~ क्षैतिज विवरण के अनुसार वायुदाब की उत्पत्ति प्रक्रिया में 7 पेटियाँ हैं।

① ध्रुवीय उच्च वायुदाब पेटि (90°)

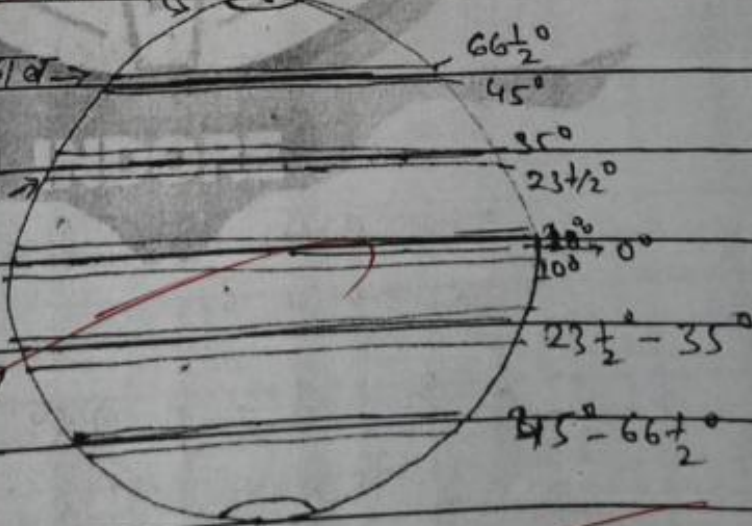
② उपध्रुवीय निम्न वायुदाब पेटि

③ उपोष्ण उच्च दाब पेटि

④ विषुवतीय निम्न दाब पेटि

⑤ उपोष्ण उच्च दाब पेटि

⑥ उपध्रुवीय निम्न दाब पेटि



90°

⑦ ध्रुवीय उच्च वायुदाब पेटि

① विषुवत रेखीय निम्न वायुदाब पट्टी -  
 - विस्तार -  $10^\circ$  उत्तरी अक्षांश से  $10^\circ$  दक्षिणी अक्षांश

- जोल्डम क्षेत्र कहते हैं।
- अल्पेतर निम्न दाब होता है जिससे दैनिक जालाहों से माने वाली व्यापारिक पवनें प्रतिदिन वर्षा करती हैं।
- अत्यधिक ताप के कारण यहाँ शक्तिज पवनें नहीं चलती।

② उपोष्ण उच्च वायुदाब कटिबंध

विस्तार - कर्क व मकर रेखाओं से लेकर  $35^\circ$  अक्षांश तक दैनिक जालाहों में विस्तृत

- अत्यधिक दाब होता है जिसका कारण पृथ्वी का घूर्णन है।
- उच्च दाब के कारण पवनें की गति स्थिर दूसरी तरफ होती है।
- दक्षिणी अक्षांश में इस कटिबंध को अश्व अक्षांश भी कहते हैं क्योंकि पहले अधिक दाब के कारण नौकायान आगे बढ़ने के लिए धार रख छोड़ने के समुद्र में भार कम करने के लिए फेंक दिया जाता था।





3 उपध्रुवीय निम्न वायुदाब पट्टी :-

विस्तार -  $45^\circ$  अक्षांश से  $66\frac{1}{2}^\circ$  अक्षांश तक दोनों गोलार्धों में

निम्न - अक्षांश पर दक्षिण से मानसून उत्पन्न उच्च दाब तथा ध्रुवीय उच्च वाली पट्टी के कारण में तरावर ऊपर लाली है निम्न वायुदाब का निम्न पट्टी है।

4 ध्रुवीय उच्च वायुदाब पट्टी :-

सतत अधिक निम्न तापमान के कारण सतह पर वायु सघन होती है इसीलिए यहाँ उच्च वायुदाब का क्षेत्र बनता है।

विस्तार - लगभग  $80^\circ$  अक्षांश से  $90^\circ$  तक

3म प्रकार पृथ्वी पर 2 ध्रुवीय उच्च वायुदाब पट्टी, 2 उपध्रुवीय निम्न वायुदाब पट्टी तथा 2 उपोष्ण उच्च वायुदाब पट्टी व एक विषुवतीय निम्न वायुदाब पट्टी पायी जाती है।

9



चूँकि पृथ्वी व सूर्य की स्थिति  
वर्ष भर समान नहीं रहती। पृथ्वी का झुकाव  
वर्षा परिक्रमण काल के कारण सूर्य के उत्तरायण  
व दक्षिणायन होने से तापमान में परिवर्तन  
होता है। जिलने वायुदाब के ये परिणाम भी  
विस्थापित होती रहती हैं।



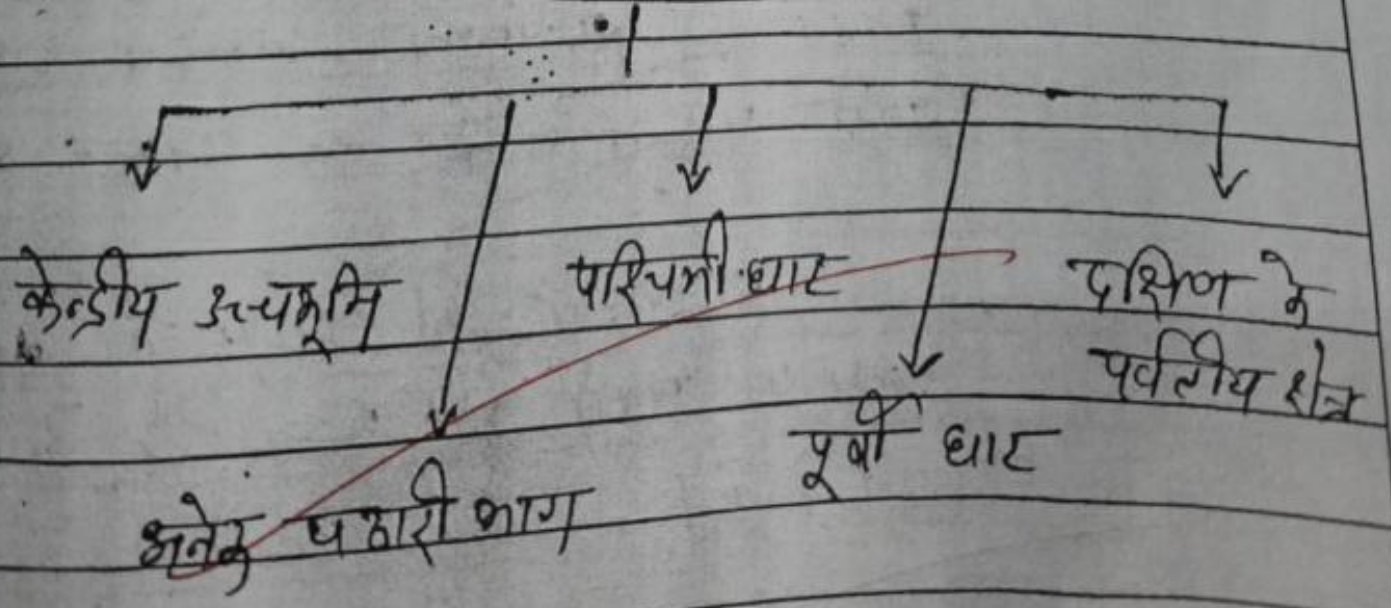


3 C  
भारत का प्रायद्वीपीय भाग त्रिभुजाकार है जो पश्चिम में गुजरात से लेकर उत्तर में दिल्ली से सीमा बनाता हुआ तथा पूर्व में मेघालय की पहाड़ियों से छोटे छु: तक तथा दक्षिण में पर्वतीय पहाड़ी क्षेत्र तक फैला हुआ है।

यह प्रायद्वीपीय भाग प्राचीन गोंडवाना शक्ति का हिस्सा है। इसी शक्ति के परिष्कार से सुवर्ण की धारा, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी नदियों की दिशा में स्पष्ट होता है।

भारत की इस प्रायद्वीपीय आकृति में भिन्नत्व के आधार पर इसे विन्तलिखित रूप से वर्गीकृत किया जा सकता है।

प्रायद्वीप के विभाग



① केन्द्रीय उच्च शक्ति -

भारवली पर्वत का विस्तार गुजरात के पालनपुर से लेकर दिल्ली रिम तक है। इसका सर्वोच्च शिखर भुकशिरवर है। अरावली पर्वत के क्षेत्र में चट्टानों के विभिन्न प्रकार के अरावली पर्वत के महत्वपूर्ण हैं।

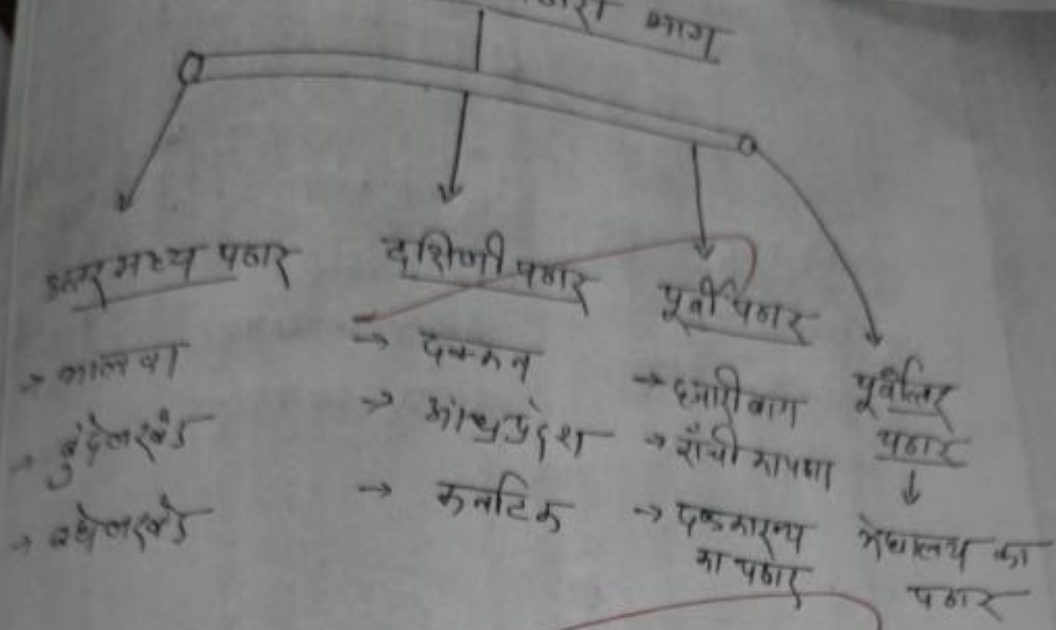
विंध्याचल मोड़दार पश्चिम पर्वत है। पश्चिम से पूर्व तक जोखाल्ट पहाड़ी, भारत के उत्तर में पारसनाथ पहाड़ियों के रूप में आरंभ तक फैला है।

अरपुड़ा एक ब्लॉक पर्वत है जो नर्मदा व तापी के मध्य जलविभाजक का कार्य करता है। विंध्याचल के पश्चिम में इसके समोच्च विस्तृत है। राजपीपला, महादेव तथा मैकल इसकी पश्चिम से पूर्व तक विस्तृत पहाड़ियाँ हैं।

राजमहल की पहाड़ियाँ केन्द्रीय उच्च शक्ति का सबसे पूर्वी किनारा है जो मैकल के पूर्व में है।



② आयडीप के पठारी भाग



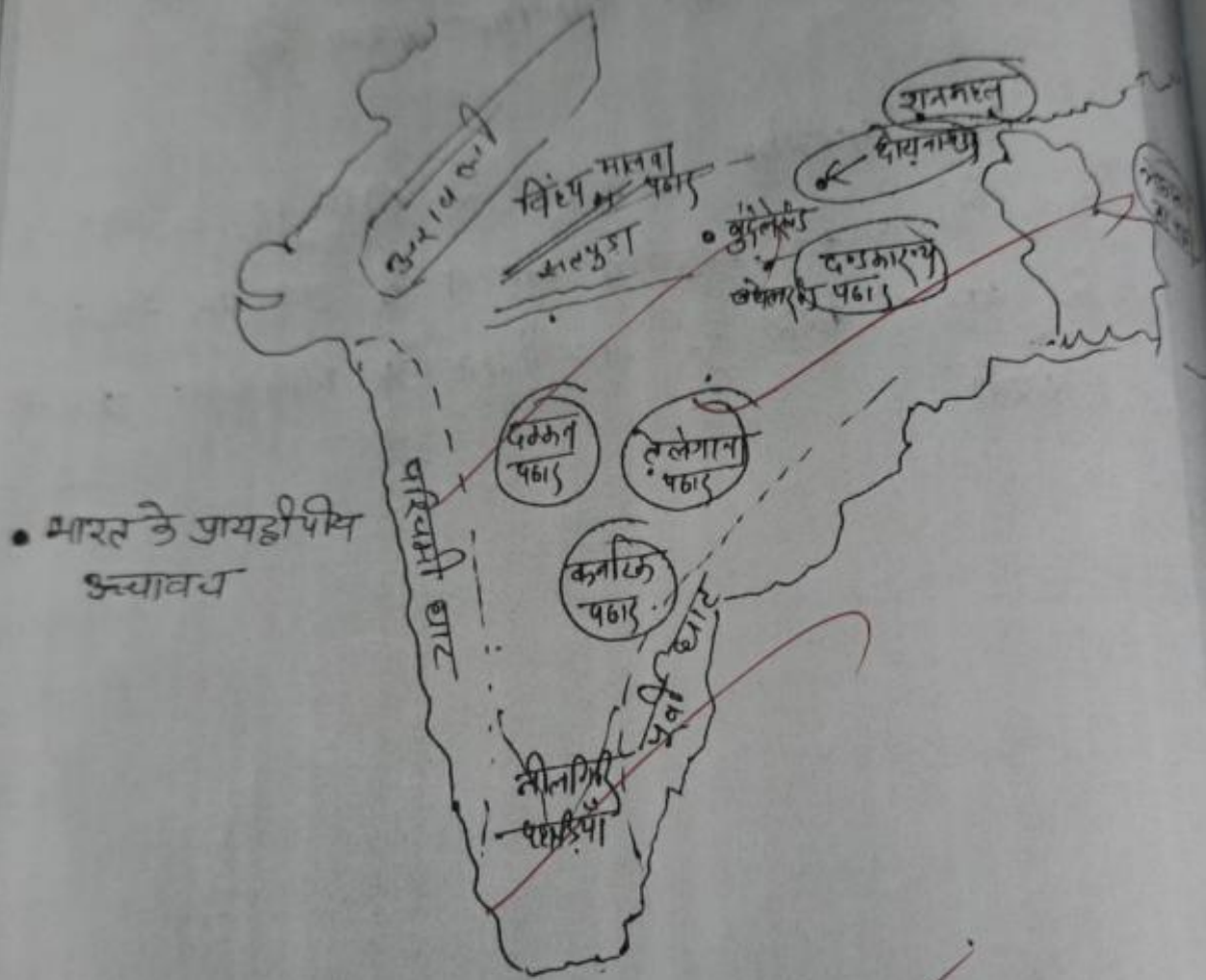
③ पश्चिमी घाट -

राप्ती के मुहाने से लेकर नीलगिरि पहाड़ियों तक की 1600 किमी शृंखला पश्चिमी घाट कहलाती है। यह पूरी तरह सम नहीं है बल्कि बीच-बीच में कहीं दुई है जिनमें थाल घाट, भोर घाट तथा पाल घाट जैसे दर्रे जुड़ते हैं। यह वास्तविक शृंखला बड़े पर्वतमाला नहीं है बल्कि छोटा-छोटा है इसे 'सह्याद्रि' भी कहते हैं। त्रेगडर तथा नील पहाड़ों की उपरलाठी

④ पूर्वी घाट -

उत्तरी सरकार (ओसा एट) से लेकर कुड़प्पा पहाड़ियों तथा तमिलनाडु की पहाड़ियों तक विस्तृत अर्धपहाड़ी भाग है। पूर्वी घाट को पूर्वी की भोर बहने वाली नदियों द्वारा विषम ऊँचाई का कर दिया है।

दूनी छार, अरवली, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी आदि नदियों के डेल्टा तथा नल्लाभाला, सरमाला, बेल्लिकोंडा व पालकोडा, शेवराय और जावदी पहाड़ियों की सम्मिलित श्रृंखलीय प्राकृति को कहते हैं।



### 5) दक्षिण के पर्वतीय क्षेत्र

दक्षिण में उत्तम पहाड़ी क्षेत्रों में नीलगिरी की पहाड़ियाँ, अन्नाप्रसारी, कर्डमम पहाड़ियाँ, पालनी की पहाड़ियाँ आदि सम्मिलित हैं। वे उत्तर-पश्चिमी भाग में कनक तथा मांथु, केरल में लगती हैं।



नीलशिखर की सबसे ऊँची चोटी डोंगबेत है  
यहाँ अन्नामलाई की भन्नाइमुनी चोटी सबसे ऊँची है।  
इस क्षेत्र के पहाड़ों के मध्य क्षेत्र में पालघाट  
रहा है।

इसी तरह अन्नामलाई व अरिगम पहाड़ों  
के शिखरों पर विमानतल करता है।

अतः भारतीय आर्य द्वीप की विभिन्न ज्वालक  
शक्तियाँ हैं जो भारतीय भूभाग के प्राकृतिक सौंदर्य  
को समृद्ध करती हुई जनजीवन में विविधता उदान  
करती हैं।

12

①

Good

3 D

भारत की अपनी विशिष्ट जलवायु और जलवायु विविधता के कारण वनों का विकास लक्ष्य सभी प्रकार के वनों का विकास हुआ है। वनों के इस विकास प्रक्रिया में स्थानीय वर्ग तथा उपमान के महत्वपूर्ण योगदान है।

भारतीय वनों का वर्गीकरण निम्नलिखित वर्गों में किया जा सकता है।

- 1) उष्णकटिबंधीय वर्षा वन / सदाबहार वन
- 2) पर्णपाती / मानसूनी वन
- 3) आर्द्र पर्णपाती वन
- 4) शुष्क पर्णपाती वन
- 5) कंटीले वन
- 6) अर्द्धशुष्क / शुष्क / मरुस्थलीय वनस्पति
- 7) मैंग्रोव / न्धारीय वन
- 8) पर्वतीय वन

भारतीय वनों का यह वर्गीकरण क्षेत्रानुसार तथा ऊँचाई प्रकृति में 900 m की ऊँचाई सीमा को आधार मानकर सम्मिलित रूप से है।



① उष्ण कटिबंधीय वर्षा वन / लटाबहार वन -  
जहाँ वर्षा की मात्रा  $> 2000 \text{ cm}$   
व तापमान  $= 15^{\circ}\text{C}$  से  $30^{\circ}\text{C}$  हो

→ भारत में इन वनों का विकास -  
परिषदीय वनों के परिषदीय टान पर  
राज्य असम, मेघालय, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश,  
- हिमालय के तराई भाग, भारत  
- अण्डमान व निकोबार द्वीप समूह

→ मुख्य वृक्ष - आयरन वुड, रोजवुड, मधोगनी  
शबरी, मर्जिन आदि।

② पणपिाली वन -

इस प्रकार के वनों को  
वर्षा की भिन्नता तथा ताप के समान होने  
के कारण पर 2 भागों में बाँटा गया है।

① आर्द्र पणपिाली वन -

जहाँ वर्षा की मात्रा  $\approx 1000-2000$  सेमी

उदा. - उत्तर पूर्वी राज्यों, पश्चिमी घाट के



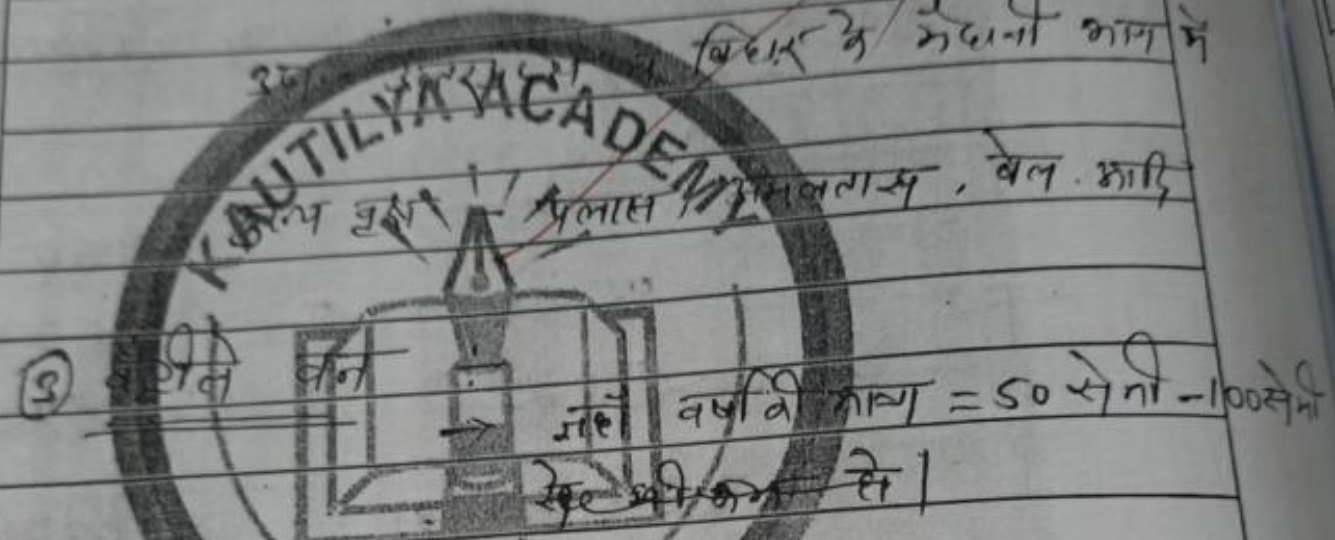
प्रश्न संख्या

हरी दालों, भोरीरा में पाये जाते हैं।

मुख्य वृक्ष - साल, शोभावन, शिप्टक आदि

1) शुष्क पत्तिली वन -  
जहाँ वर्षा की मात्रा = 70-100 सेमी.

विहार के मैदानी भाग में



मुख्य वृक्ष - पलाश, मल्ल, बेल आदि

2) वृक्षीय वन -  
जहाँ वर्षा की मात्रा = 50 सेमी - 100 सेमी  
के भी कम है।

मुख्य वृक्ष - दक्षिण पश्चिमी केजाब, हरिपाणा  
राजस्थान, म.प्र. व उत्तर प्रदेश के  
अधिकांश प्रदेश।

3) कुरुक्षेत्र वनस्पतियों - घास एवं झाड़ियाँ जैसे  
बैर, बबूल, खजूर, खैरड़ी आदि

4) महस्थलीय वन -  
जहाँ वर्षा की मात्रा 50 सेमी के  
भी कम है।



1) दक्षिण पर्वतीय वन -

मे प्रायः भारतीय के पश्चिमी घाट विस्तारित तथा नीलगिरि पर्वत श्रृंखलाओं में फैले हुये हैं।

यस. इसका एवं शीतलता करिंभीय वनों का विकास हुआ है। जिसके निम्नलिखित हैं -  
अर्ध-शुष्क वन, शुष्क वन तथा सर्पिल वन



2) मैंग्रोव / सारिप वन

→ ये सारे वन में विकसित होने वाले लठीम वन हैं।

→ भारत में लठीम वनों के अलग-अलग गंगा, गोदावरी, कावेरी, कृष्णा के डेल्टा भाग आते हैं।

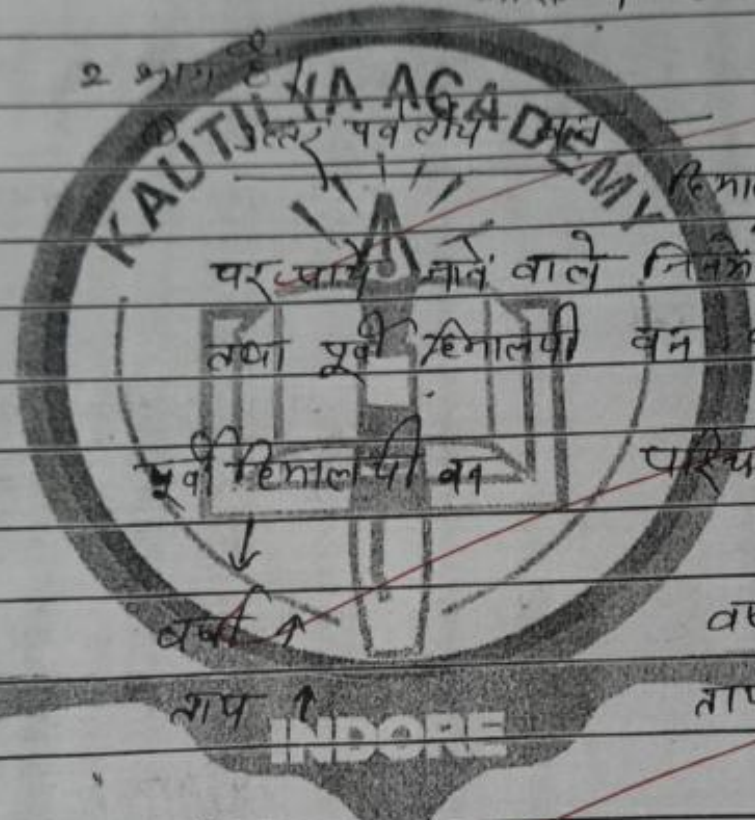
→ प्रमुख वृक्ष - सुंदरी, गोलपत्ता, गगनि, गोवा पाशुर.

इस प्रकार भारतीय वन अपनी विविधता एवं विविध जीवों के आवास, प्रजातियों की विविधता

सेवा - राजस्थान के महास्थलीय भाग, 1977 में  
वनास्पतिगों - खड्डल, नागफनी आदि

(4) पर्वतीय वन - भारत में पर्वतीय वनों के

2 भाग हैं।



पर्वतीय वन - हिमालय के गिरिपद पर खड़े होने वाले निचले पश्चिमी हिमालयी तथा पूर्वी हिमालयी वन शामिल हैं।

पूर्वी हिमालयी वन

पश्चिमी हिमालयी वन

↓  
वर्षा ↑

↓  
वर्षा ↓

↑  
ताप

↓  
ताप ↓

1300 मी से अधिक ऊंचाई पर पाये जाते हैं।  
वनों को टुंड्रा वनस्पति कहते हैं।

इका. पूर्वी हिमालय में "ओक" सदाबहार वनों का विस्तार है।

हिमालयी वनों में ऊंचाई के आधार पर सदाबहार पर्वित्री, शुष्क (शीतोष्ण कठिंधीय) स्तूपारु वन पाये जाते हैं।





के लिये विश्व भर में उल्लिखित है।

हाल ही में भारतीय वन सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार भारतीय वनावरण उसके कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 21.67% है। यह उल्लिखित पिछले रिपोर्ट की तुलना में 0.65% की घटि में आया है।

भारत की राष्ट्रीय वन नीति, 1988 में देश के 33% भौगोलिक क्षेत्र को वन व वृक्ष आवरण का लक्ष्य रखा गया है। जिसकी दिशा में भारत सरकार द्वारा लगातार प्रयास किये जा रहे हैं।

11

INDORE